Shiva in Indian Art

भारतीय कला में शिव

A catalogue on the Sculptures, Miniatures, Terracotta and Bronzes from the collection of the Allahabad Museum

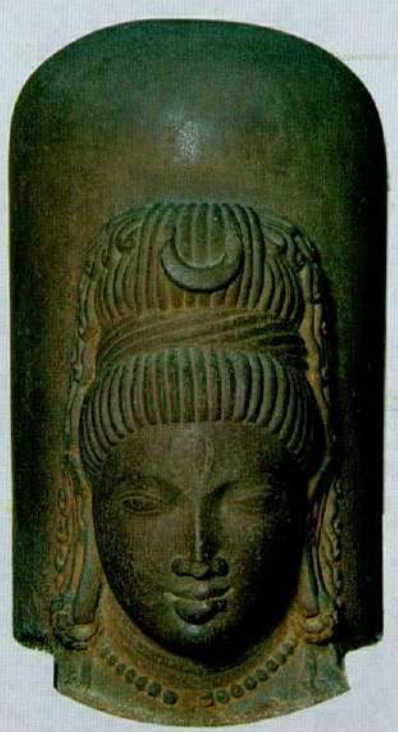

Editor : Rajesh Purohit
Director

21st October, 2014 - 18th February, 2015

Shiva in Indian Art

भारतीय कला में शिव

A catalogue on the Sculptures, Miniatures, Terracotta and Bronzes from the collection of the Allahabad Museum

Editor : Rajesh Purohit

Allahabad Museum

2015

name has been translated as "the roarer". In the Rigveda, Rudra has been praised as the "mightiest of the mighty". The Shri Rudram hymn from the Yajurveda is dedicated to Rudra, and is important in the Shaivism sect.

The third eye of Shiva, burns the desire i.e., *Kama* thus he is called *Triyambakam*. In the Mahabharata, he has been described as the god having three eyes. His crescent moon on his head gives him the name *Chandrashekhera* and*Chandramauli*. The crescent moon on his head represents the27thday of the moon. His drum is shaped like an hourglass called *Damaru*, a percussion instrument. His axe is called *Parshu*whom he gave to *Parshurama*. His vehicle is Nandi. His attendants are *ganas*. He lives in the Himalayas at the mountKailasha which resembles like a linga which represents like a centre of the universe. He loves to dwell atKashi. The *Dwadasha* (Twelve) *Jyotirlinga* are the sacred places dedicated to him for the Brahminical pantheon. Shiva's tantrik form coupled with Shakti is the embodiment force behind all existence in the universe. Shiva's body is said to consist of five mantras called *Panchbrahmanas* as forms of Gods i.e., *Sadyojata*; *Vamadeva*; *Aghora*; *Tatpurusha* and *Ishana*. They are represented as five faces representing five elements, five senses, five organs of perception and five organs of action.

Shiva also means 'one in whom the whole creation sleeps after dissolution' auspicious. Thus it is the symbol of great god of universe who is all auspicious. Shivalinga is regarded as a whole creation lives after dissolution.

In this exhibition, we have made an endeavour to depict some of the tangible and intangible thoughts on Shiva transformed into forms and shapesthrough the ages, right from the Indus Valley period to the historical period in various styles and medium. The exhibits displayed here include some exquisite paintings, sculptures depicting different aspects of Shiva in our art tradition. We hope that the audience will not only been enthralledby seeing this exhibition but also quest for understanding the artistic creation of our incredible heritage and will eventually try to cent wire the meaning of Shiva which have been unravelled in these art forms. Let the cosmic Shiva and his grace enlighten everyone through his grace to understand the meaning of life through the concept of *Satyam*, *Shivam* and *Sundaram*.

The exhibition highlights some of the accusative sculptures, Miniature Paintings Terracotta and Bronzes from the rich collection of the Allahabad Museum. The objective of the exhibition is to bring it to light the collection of the Allahabad Museum on a theme which is very popular, yet many unprevailed and unknown aspects of the cult of Shiva that can be seen in the tangible images displayed in this special exhibition.

Rajesh Purohit

भारतीय कला में शिव

शिव यद्यपि जीवों अथवा प्राणियों के स्वामी, पशुपति, भूपति एवं भूतनाथ के रूप में परिभाषित किए जाते रहे हैं लेकिन देवत्रयी में (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) वे संहार तथा प्रलय के देवता के रूप में पहचाने जाते रहे हैं। जबकि वह व्याकरण शास्त्र के प्रणेता, महान संगीतकार तथा नृत्य विशरदों में प्रमुख हैं इसीलिए मूर्तिकला में 'नटराज' के रूप में उन्हें प्रस्तुत किया गया है। उनका आध्यात्मिक नृत्य उनकी आभा को द्योतित करता है। उनके विविध प्रकार के नृत्य जैसे नादान्त अथवा ताण्डव, ललिततिलक, कटिसम, तालसम्फोटित आदि नाट्यशास्त्र में भरतमुनि द्वारा बताए गए हैं। वह योग, वीणा तथा ज्ञान के महान शिक्षक हैं, इसीलिए वे योगदक्षिणामूर्ति, वीणाधरदक्षिणामूर्ति, ज्ञानधनदक्षिणामूर्ति तथा व्याख्यानदक्षिणामूर्ति के प्रतीक रूप में जाने जाते हैं। उनका हरिहर एवं अर्धनारीश्वर स्वरूप क्रमशः विष्णु एवं शक्ति की युगल देवमूर्ति के रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा है। भैरव, अघोर रुद्र, पशुपति वीरभद्र, तिरुपति तथा कंकाल नाम से भी शिव को अभिहित किया जाता है। शिव अनुग्रह अथवा प्रसाद और तिरोभाव के रूप में भी माने जाते रहे हैं। वे अनेक कलाओं के जनक, सर्जक तथा योग के प्रतिष्ठापरक हैं।

शिव की व्याख्या को वैज्ञानिक तथा शाश्वत सन्दर्भ में समझने की आवश्यकता है। आसुरी शक्तियों के विध्वंसक शिव, ईश्वर, शंभु एवं शाक्त के नाम से भी जाने जाते हैं। कला में शिव गंगाधर, उमा-महेश्वर, अपस्मार पुरुष के ऊपर नृत्यरत शिव के रूप में शिल्पित किए गए हैं। उनका लिंगस्वरूप शिव और उमा के संयोग का प्रस्तुतिकरण है। शताब्दियों से उनका चमत्कारिक एवं वृषभवाहन स्वरूप भारतीय कला, धर्म में जनमानस को आकृष्ट करता रहा है।

शिव के अनेक रूप हैं। उनका महादेव स्वरूप समुद्र मंथन से निकले हलाहल पान से संपृक्त है। वे महायोगी होकर भी अपनी पत्नी उमा और पुत्र गणेश एवं कार्तिकेय के साथ कैलाश पर निवास करते हैं। वे भौतिकता से दूर मसानवासी भोलानाथ के रूप में उत्कीर्णित किये जाते रहे हैं। उनके ऊपर प्राकृतिक सत्व, रज तथा तम् की गुणत्रयी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उनका नाम सभी के लिए शिवकारी हैं। वे शाश्वत शुद्ध हैं। वेद में उन्हें 'रुद्र' कहा गया है, जिसका सम्बन्ध आंधी एवं मृगया से है। ऋग्वेद में उन्हें देवाधिदेव कहा गया है। यजुर्वेद का श्रीरुद्रम् सूक्त रुद्र को समर्पित है, जिसकी शैव धर्म में महत्ता है।

अपने तृतीय नेत्र द्वारा कामदहन करने के कारण उन्हें 'त्रयम्बक' कहा गया। महाभारत में उन्हें इसी अर्थात् त्रयम्बक रूप में प्रस्तुत किया गया है। शीश पर चन्द्रमा धारण करने के कारण वे 'चन्द्रशेखर' अथवा 'चन्द्रमौलि' हैं, जो चन्द्रमा की 27 कलाओं को अभिव्यक्त करता है। परशु धारण करने का कारण वे परशुराम हैं तथा डमरू उनका वाद्य है। नन्दी उनका वाहन तथा गण उनके अनुचर हैं। यद्यपि वे कैलाशवासी हैं, फिर भी उनका लिंग स्वरूप अखिल विश्व का केन्द्र है तथा काशी में रहना उन्हें प्रिय है। द्वादश ज्योर्तिलिंग जो ब्राह्मण परम्परा में स्थापित पीठ है, शिव को समर्पित है। शिव का युगल स्वरूप उनके तांत्रिक रूप को प्रकट करता है। सद्योजात, वामदेव, अघोर, तत्पुरुष तथा ईशान उनके 'पंचब्रह्म' हैं जो कि पंचतत्व, पंचचैतन्य, पंचलिंग तथा पंचदिक है। शिव का अर्थ वह है जिसमें सम्पूर्ण चराचर समाहित है। यही महादेव का प्रतीक है।

यह प्रदर्शनी युगयुगीन शिव के सजीव एवं प्रतीकात्मक स्वरूप के चिंतन को प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। सैधव सभ्यता से लेकर ऐतिहासिक काल तक विविध माध्यमों से शिव को अभिव्यक्त किया जाता रहा है, अतः इस प्रदर्शनी में भी भारतीय कला परम्परा में प्रदर्शित शिव के विविध रूपों को संग्रहालय में संग्रहीत शिव के चित्रों तथा मूर्तिशिल्पों के माध्यम से दर्शाया गया है। हमें विश्वास है कि दर्शक प्रदर्शनी को देखकर न केवल उद्धेलित होगें अपितु अपनी अमूल्य धरोहर की कलात्मकता को समझकर तृप्त होंगे। यह प्रदर्शनी शिव के सन्दर्भ, उनके कलात्मक निदर्शन, उनके आध्यात्मिक तथा सांसारिक स्वरूप, उनकी आभा के साथ ही हम सभी को सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् का भी साक्षात्कार कराएगी।

राजेश पुरोहित

Shiva In Stone Sculptures

पाषाण शिल्प में शिव

Ekmukha Shiva Linga
Circa 5th Century C.E.
Khoh , Satna, District, Madya Pradesh
GAR NO-(154) AM-SCL-153

The *Shivalinga* was found in *situ* in an abandoned shrine at Nakti-ki-talai just outside the village of Khoh, and is in excellent condition except for a minor damage. The base is a square undressed tenon which was once sunk into a *pitha*. Only the head and neck of the image are shown emerging from the smooth cylindrical form of the *linga* which lacks the so-called *brahma-sutra* design on the top. The Shiva wears an *ekavali* (Beaded necklace) close to the neck, small circular pearl earrings, and a *jatamukuta* adorned with a crescent in the center. Short curls of hair escape from the top, falling on both sides of the bead and strands of hair can also be seen over the shoulders. The face is illuminated with an expression of quiet repose. The eyes are deep set, with narrow eyelids, and marked with pupils; the third eye, lightly incised, is vertically placed in the middle of the forehead; the earlobes are greatly elongated and the lower lip is full and sensuous, the latter feature being present in other images from this area.

एक मुख शिवलिंग
लगभग ५वीं शती ई०
खोह, जनपद सतना, मध्य प्रदेश

यह शिवलिंग अपने वर्तमान स्वरूप में मध्य प्रदेश के खोह जिले में स्थित 'नकटी की तलाई' गाँव के बाहर एक पुराने मंदिर में रखा मिला था। यह चतुष्कोणीय आधार पर मूल रूप में रखा हुआ था। यह बेलनाकार शिवलिंग के ऊपरी भाग पर तराशा गया है, जो कि ग्रीवा एवं मुख भाग को परिलक्षित करता है। गले में रूद्राक्ष की माला, कानों में कुण्डल तथा जटामुकुट पर अर्द्धचन्द्र सुसज्जित है। शिव के कुंचित केश ऊपर की तरफ उठते हुए तथा दोनों कंधों पर लटकते हुए दिखाई दे रहे हैं। मुख मुद्रा ध्यानरत एवं शान्त है। जबकि नेत्र अर्द्धनीमिलित हैं। तृतीय नेत्र मस्तक के मध्य में लम्बवत् दिखाया गया है तथा अधरों का अंकन भी स्पष्ट है। इस क्षेत्र से प्राप्त बाद की मूर्तियों में भी उपर्युक्त विशेषताएं परिलक्षित होती है।

Kalyanasundara Murti : Fragment of a Temple Wall
Circa 10th Century C.E.
Manikpur, Pratapgarh District, Uttar Pradesh
GAR NO-AM-SCL-264

The Shiva, in *tribhanga* pose, turns towards his bride, whose right hand he holds in his own. He is four-armed, but the objects he held are not now distinguishable. The Goddess holds a mirror in the left hand. Seated between the figures is *Brahma* bending over the sacred fire. To their left is *Nandi,* and to the right an attendant, left unfinished. The sides of the niche in which the image is placed consist of circular pilasters.

कल्याण सुन्दर मूर्ति: मन्दिर की खण्डित दीवार
लगभग १०वीं शती ई०
मानिकपुर, जनपद प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश

त्रिभंग मुद्रा में अवस्थित शिव अपनी पत्नी का दाहिना हाथ पकड़े हुए हैं। चतुर्भुज शिव के हाथ के आयुध की पहचान स्पष्ट नहीं है। देवी के वाम हस्त में दर्पण है। दोनों के मध्य में पवित्र अग्नि प्रज्जवलित है तथा उनके बांए नन्दी एवं दायीं तरफ परिचर दिखाए गए हैं। बायाँ भाग अपूर्ण है। मंदिर की खण्डित दीवार के जिस आले में इस मूर्ति का निर्माण हुआ था वह गोलाकार भित्तिस्तम्भ से युक्त था।

Shiva Parvati
Circa 9th Century C.E.
Bharwari, Kaushambi District, Uttar Pradesh
GAR NO-(992) AM-SCL-987

The Shiva is shown standing in *samabhanga* pose with his consort Parvati. Three of his four arms are broken. The upper left hand held a *trishula*. He wears a broad necklace, earrings and a tiara above which rises the tall *jata*. Behind the Shiva is a badly damaged Nandi, next to which stands a male attendant holding a bowl in the right hand. A male figure kneels at Shiva's feet, hands folded in adoration. Parvati, also in *sambhanga* pose, stands to the left of the Shiva. The right hand is broken; she holds a large pot in the left hand. She wears a *dhoti*, the regularly pleated folds of which fall between the legs. The simple girdle is provided with two small loops, an *ekavali* (Beaded necklace) adorns the neck and the hair is done in a large circular bun above the head. The Goddess is flanked by two female attendants and a kneeling figure, now badly damaged, is at her feet. The large oblong haloes are edged by a broad band of foliate petals.

शिव-पार्वती
लगभग ९वीं शती ई०
भरवारी, जनपद कौशाम्बी, उत्तर प्रदेश

शिव समभंग मुद्रा में अपनी पत्नी पार्वती के साथ खड़े है। उनकी चार भुजाओं में से तीन भुजाएं खण्डित हैं। ऊपर के बांये हाथ में त्रिशूल है। उनके गले में माला, कानों में कुण्डल तथा शीष पर जयमुकुट सुशोभित है। शिव के पीछे एक पुरुष नन्दी की खण्डित मूर्ति है तथा दायीं तरफ परिचर हाथ में कटोरा लिए खड़ा है। एक पुरुष श्रद्धा भाव से दोनों हाथ जोड़ो शिव के चरणों में नतमस्तक हैं बांयी तरफ पार्वती समभंग मुद्रा में खड़ी है। उनका दाहिना हाथ खण्डित है तथा बांये हाथ में एक बड़ा पात्र है। उन्होंने साड़ी पहन रखी है जिसकी चुन्नटें सदैव की तरह दोनों पैरों के मध्य दर्शनीय है। गले में एकावली तथा सिर के बाल कुंचित हैं। देवी दो परिचारिकाओं के साथ उत्कीर्णित हैं, देवी के चतुर्दिक एक विशाल आभामण्डल सुशोभित है।

Ardhanarishvara : Fragment of a Temple Wall
Circa 12th Century C.E.,
Jamsot, Allahabad District, Uttar Pradesh
GAR NO-AM-SCL-267

All four arms are broken so that none of the attributes remain. The right half of the figure is his male part shown crowned with a *jatamukuta*. The bull is seen at the feet. The left half is his female part and is accompanied by a lion.

अर्द्धनारीश्वरः मन्दिर की खण्डित दीवार
लगभग 12वीं शती ई०
जमसोत, जनपद इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

मूर्ति की चारों भुजाएं खण्डित हो चुकी हैं जिस कारण मूर्ति के गुण भाव का अनुमान लगाना कठिन है। मूर्ति का दक्षिण पुरूष भाग स्पष्ट है जो कि जटामुकुट द्वारा सुशोभित है। वृषभ चरणों में दिखाई दे रहा है। वामार्द्ध स्त्री भाग सिंह के साथ प्रदर्शित है।

Dancing Shiva : Fragment of a Temple wall
Circa 12th Century C.E.
Jaso, Satana District, Madhya Pradesh
GAR NO-(451) AM-SCL-453

The Shiva is shown dancing in the *catura* pose, holding a *damaru* (a percussion musical instrument) and a *trishula* (trident) in the two upper hands, A small bull crouches near the right leg.

नृत्यरत शिव : मन्दिर की खण्डित दीवार
लगभग १२वीं शती ई०
जसो, जनपद सतना, मध्य प्रदेश

नृत्यरत चतुर्भुज शिव, ऊपर के दोनों हाथों में डमरू तथा त्रिशूल धारण किए हैं तथा नीचे दायें पैर के समीप वृषभ एक लघु मूर्ति उत्कीर्णित है।

Colossal Head of Shiva
Circa 11th Century C.E.
Mirzapur District, Uttar Pradesh
GAR NO-AM-SCL-294

The Shiva has a broad face, the protruding eyes being marked with a pupil and carved with a heavy upper eyelid, the lower eyelid being hardly shown. A vertical third eye is incised on the forehead. The *jata* is clasped by an elaborate tiara.

दीर्घकाय शिव शीर्ष
लगभग ११वीं शती ई०
जनपद मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश

शिव की विशाल मुखाकृति पर अर्द्धनिमीलित आंखों का भ्रऊ भाग सुंदर ढंग से उकेरा गया है जबकि निम्न भाग कम दर्शनीय है। मस्तक पर तृतीय नेत्र लम्बवत् विद्यमान है तथा वे जटामुकुट धारण किए हैं।

Uma-Maheshvara
Circa 12th Century C.E.
Gaya District, Bihar
GAR NO-AM-SCL-237

Uma-Maheshvara seated in *alingana-mudra* with their feet respectively on the back of the Lion and Nandi. Uma seated in the lap of her lord, embraces him with the right hand and holds mirror in the left. Maheshvara has placed his lower right hand on the chin of Uma and carries *nilotpala* and *trident* in the upper right and left hands while he caresses the breast of Uma with his lower left hand.

उमा- माहेश्वर
लगभग १२वीं शती ई०
जनपद गया, बिहार

आलिंगन मुद्रा में बैठी उमा-माहेश्वर की मूर्ति के पैर क्रमशः उनके अपने वाहन सिंह तथा नन्दी की पीठ पर रखा हुआ प्रदर्शित है। शिव की गोद में उमा बैठी है जो बाएं हाथ में दर्पण लिए हुए हैं। शिव का दाहिना हाथ उमा की ठुड्डी पर है तथा ऊपर के दायें और बांये हाथ में क्रमशः नीलकमल तथा त्रिशूल दर्शनीय है जबकि नीचे का बायां हाथ उमा के स्तन पर है।

Ishana : Fragment of a Temple Wall
Circa 11th Century C.E.
Manikpur, Pratapgarh District, Uttar Pradesh
GAR NO-AM-SCL-552

The standing image of Shiva, regent of the Northeast corner, Ishana, is a two-armed figure, the right hand raised in *abhayamudra,* the left carrying a short *trishula.* The hair is done in a simple *jata-mukuta* with a crescent moon in front. It would appear that he is wearing a lower garment made of a skin, possibly of the tiger. Beneath is a rather clumsily rendered bull with head turned up. The niche is bordered by two square pilasters and triangular half-lozenges filled with flowers and bordered by an indented chequer pattern.

ईशान : मन्दिर की खण्डित दीवार
लगभग ११वीं शती ई०
मानिकपुर, जनपद प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश

मंदिर के उत्तर पूर्वी कों पर शिव की स्थानक मुद्रा में यह प्रतिमा उत्कीर्णित थी। ईशान का दाहिना हाथ अभय मुद्रा में तथा बायें हाथ में त्रिशूल है। शीश पर जटामुकुट तथा मस्तक पर अर्द्धचन्द्र विद्यमान है। वे लम्बा बाघम्बर धारण किए हैं। वाहन नन्दी का मुख पीछे की तरफ घूमा हुआ है।

Uma-Maheshvara

Circa 12th Century C.E.

Khajuraho, Chhatarpur District, Madhya Pradseh

GAR NO-AM-SCL-263

The Shiva, in *ardhaparyankasana*, embraces his consort Parvati, who is seated on his lap, his lower left hand being placed below her breast, the two upper hands holding a trident and a snake. Below are the lion and the bull *vahanas*, together with the sage Bhringi. The two pilasters at the side are topped by seated four-armed figures both of whom hold a *bijapuraka* in the lower left hand, their lower right hands being in *abhaya mudra*. The two upper hands hold unidentified objects. The offsets at the side carry, from top to bottom, figures of a seated two-armed deity holding a club and a *bijapuraka, vyalas*, and standing attendants carrying clubs. Above Shiva is a pedestal with five *lingas* flanked by flying *vidyadharas*.

उमा-माहेश्वर

लगभग १२वीं शती ई०

खजुराहो, जनपद छतरपुर, मध्य प्रदेश

अर्द्धपर्यंकासन में अवस्थित शिव-पार्वती के साथ आलिंगनबद्ध है जो उनकी गोद में बैठी है। उनका बांया हाथ उनके स्तन पर है तथा ऊपर के दोनों हाथ त्रिशूल तथा सर्प धारण किए हुए हैं। निम्न भाग में वाहन सिंह तथा वृषभ भृंगी के साथ प्रदर्शित हैं। ऊपर के दोनों भाग में चतुर्भुजी आकृति बांये हाथ में बीजपूरक लिए हुए बैठी है। उनके दोनों दाहिने हाथ अभय मुद्रा में तथा ऊपर के दोनों हाथ की आकृतियों की पहचान संभव नहीं है। बैठी हुई आकृति के दोनों तरफ ऊपर से नीचे तक दो भुजी देवता बैठे हुए दिखाए गए हैं जिनके हाथ में दण्ड बीज-पूरक तथा व्याल हैं। खड़े हुए परिचारकों के हाथ में केवल दण्ड है। शिव के ऊपर उड़ते हुए विद्याधर पांच लिंगों के साथ दर्शाए गए हैं।

Chaturmukha Shivalinga
Circa 10th - 11th Century C.E.
Kutari, Allahabad District, Uttar Pradesh
GAR NO-(705) AM-SCL-700

Chaturmukha shivalinga. Each head wears a pair of *kundalas* in the perforated ears and a *jata* on the head. The base of *linga* is square, and the top is cylindrical.

चतुर्मुख शिवलिंग
लगभग १०वीं-११वीं शती ई०
कुटारी, जनपद इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

चतुर्मुख शिवलिंग के प्रत्येक कान में कुण्डल उत्कीर्णित है तथा शीश पर जटा सुशोभित है। शिवलिंग का आधार चतुष्कोणीय है लेकिन ऊपरी भाग गोलाकार है।

Hari-Hara
Circa 9th Century C.E.
Manikpur, Pratapgarh District, Uttar Pradesh
GAR NO-(564) AM-SCL-562

The four-armed God holds a *trishula* in the upper right hand and a *chakra* in the upper left hand. The lower left hand is broken while the lower right hand is in *varada* mudra. He wears a short *dhoti*, *necklace* and *upavita*; the head-dress being a combination of the *jata* and *kiritamukuta*. The oblong *halo* is filled with broad lotus petals. Above are two *vidyadharas* in animated flight. At the bottom, flanking the main image are attendants and Nandi and Garuda, the *vahanas* of Shiva and Vishnu.

हरि-हर
लगभग ९वीं शती ई०
मानिकपुर, जनपद प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश

चतुर्भुज शिव ऊपरी दोनों हाथों क्रमशः दायें और बायें हाथ में त्रिशूल तथा चक्र धारण किए हुए है। नीचे का बायां हाथ खण्डित है जबकि दायां हाथ वरद् मुद्रा में है। उन्होंने धोती, कण्ठहार तथा यज्ञोपवीत धारण किया है जबकि शीश किरीचमुकुट से अंलकृत हैं। कमल दल से युक्त विशाल आभामण्डल पीछे सुशोभित हैं। ऊपर दो विद्याधर उड़ते हुए दिखाई दे रहे हैं जबकि नीचे शिव तथा विष्णु के वाहन क्रमशः नन्दी और गरूड़ परिचरों के साथ अंकित है।

Fierce Manifestation of Shiva : Bhairava

शिव का रौद्र प्रकटीकरण : भैरव

Bhairava, sometimes known as Kala Bhairava, is the fierce manifestation of Shiva associated with annihilation. He is one of the most important deities in Nepal, Rajasthan, Karnataka, Tamil Nadu and Uttarakhand, who originated in Hindu mythology and is sacred to Hindus, Buddhists and Jains alike. His temples or shrines are present within or near most Jyotirlinga temples. The origin of Bhairava can be traced to the conversation between Brahma and Vishnu recounted in the Shiv Mahapurana, where Vishnu asked Brahma who is the supreme creator of the Universe. Arrogantly, Brahma told Vishnu to worship him, he being the supreme creator. One day Brahma thought, "I have five heads, Shiva also has five heads. I can do everything that Shiva does and therefore I am Shiva" Brahma had become a little egoistic. Not only had he became egoistic, he started to forge the work of Shiva. Brahma started interfering in what Shiva was supposed to do. Then Mahadeva (Shiva) threw a small nail from His finger, which assumed the form of Kala Bhairava, and casually went to cut the head of Brahma. The skull of Brahma is held in the hands of Kala Bhairava; Brahma Kapala in the hands of Kala Bhairava and Brahma's ego was destroyed and he became enlightened. Then onwards he became useful to himself and to the world and deeply grateful to Shiva. In the form of the Kaala Bhairava, Shiva is said to be guarding each of these Shaktipeeths. Each Shaktipeeth temple is accompanied by a temple dedicated to Bhairava

भैरव जो कि काल भैरव के रूप में भी जाने जाते हैं, शिव का रौद्र अवतार हैं। वे राजस्थान, कर्नाटक, तमिलनाडु तथा उत्तराखण्ड में पूजे जाने वाले महत्वपूर्ण देवताओं में एक हैं। यद्यपि उनकी उत्पत्ति हिन्दू परम्परा में मानी गई है तथापि वे जैन तथा बौद्ध परम्परा में भी उतने ही पवित्र स्वीकार्य किए गए हैं। महापुराण के अनुसार जब विष्णु ने ब्रह्मा से पूछा कि ब्रह्मांड का सर्वोच्च कर्ता कौन है? क्रोध में ब्रह्मा ने विष्णु से कहा कि उनकी पूरा करो जो सर्वोच्च सर्जक हैं। एक दिन ब्रह्मा ने सोचा मेरे पांच सिर है तथा शिव के भी पांच हैं। मैं वह सब कुछ कर सकता हूँ जो शिव कर सकते हैं अतएव मैं शिव हूँ। ब्रह्मा थोड़े अहंकारी हो गए। वो अहंकारी ही नहीं हुए अपितु वह शिव का भी कार्य करने लगे। तब शिव ने अपना नाखून उंगली से काटकर फेंका जो काल भैरव रूप में प्रकट हुआ जिसने जाकर ब्रह्मा के सिर को काट दिया। ब्रह्माकपाल काल भैरव के हाथ में आ गया तथा उनका अहंकार नष्ट हुआ और उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। इस प्रकार वे शिव के कृतज्ञ हुए। काल भैरव के रूप में शिव समस्त शक्तिपीठों के संरक्षक हैं। प्रत्येक शक्तिपीठ का एक मंदिर काल भैरव को समर्पित है।

Bhairava
Circa 9th Century C.E.
Kaushambi District, Uttar Pradesh.
GAR NO.- AM-SCL-881

Bhairav stands in slight tribhanga with the lower left hand on the hip. In the other hands he holds a bowl, a two-headed drum, and a trisula. He has bulging eyes with incised lids and brows, an open mouth showing fanged teeth, a moustache, and a short beard. On the right shoulder may be seen a cobra?s hood. The dress and ornaments include a necklace of three strands of beads and a large foliate pendant, a vanamala, and a short dhoti. The hair is done in the style known as pingalorddhakesa, and has two rows of curls. The roughly carved halo has a plain center followed by a band of lotus petals and a coarse jeweled cable. There are two small attendants on either side, one male and one female. The woman, who is the larger of the two, carries a pot and the man, two indistinct objects.

भैरव
लगभग ९वीं शती ई०
जनपद कौशाम्बी, उत्तर प्रदेश

बायां हाथ कमर पर रखे ईशत् त्रिभंग मुद्रा में भैरव खड़े हैं। एक हाथ में उन्होंने खप्पर ले रखा है तथा दूसरे हाथ में द्विमुखी डमरू तथा त्रिशूल है। उनकी खुली आंखे भ्रूभंग तथा खुले हुए मुख के ऊपर मूंछ तथा दाँत दिखाई दे रहे है। मुख पर हल्की दाढ़ी भी दिख रही हैं। दाहिने कंधे पर नागफंण परिलक्षित है। वस्त्राभूषण में तीन लड़ियों की माला जिसमें एक लम्बा लॉकेट, वनमाला तथा छोटी धोती है। पिंगलोर्द्धव केशी भैरव के कुंचित केश दो तरफ लटके हुए हैं। आभामण्डल बहुत अच्छी तरह से उत्कीर्णित नहीं है। आभामण्डल का मध्य भाग सादा तथा किनारे का भाग कमल दल के आकार में उकेरा गया है। दो परिचर स्त्री और पुरुष रूप में अलग-बगल खड़े हैं। स्त्री अन्य दोनों से लम्बी है तथा हाथ में पात्र लिए हुए हैं जबकि पुरुष आकृति की पहचान संभव नहीं है।

Shiva in Indian Miniatures

भारतीय लघुचित्रों में शिव

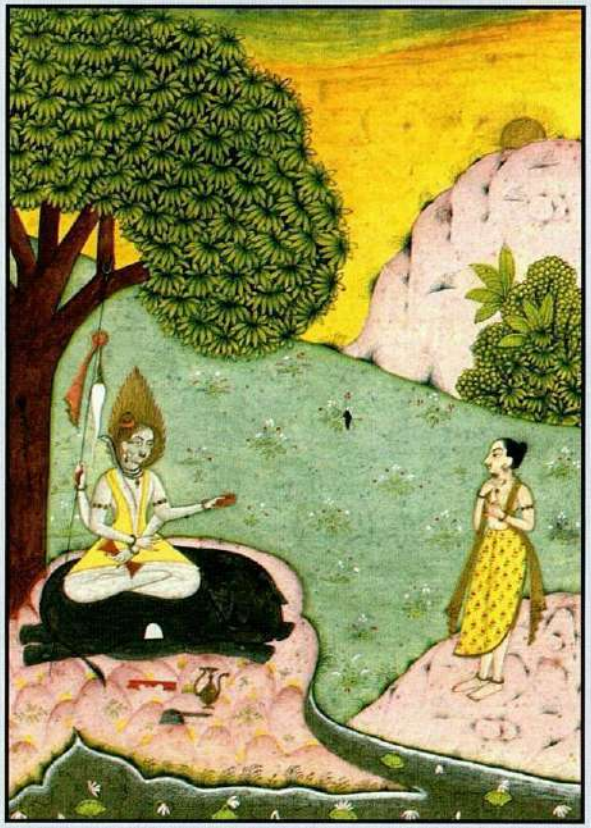

Shiva and Rati
Circa 18th Century C.E.
Rajasthani Style
GAR NO-AM-MSS- 329

Picture shows four armed Shiva seated on the skin of an elephant spread on a rock under a tree. On another rock, just apposite to Shiva, stands a lady. She seems to be Rati. The wife of "Kamdev" who was burnt by Shiva earlier. She is treating Shiva to bring her husband to life again. Flowers of fire are seen behind the head of Shiva.

शिव एवं रति
लगभग १८वीं शती ई०
राजस्थानी शैली

चित्र में चतुर्भुज युक्त शिव गजचर्म पर विराजमान दिखाए गए हैं। उनके समक्ष एक स्त्री खड़ी प्रदशित है जो कि संभवतः रति है। वह शिव से अपने पति को पुर्नजीवित करने हेतु प्रार्थना कर रही है।

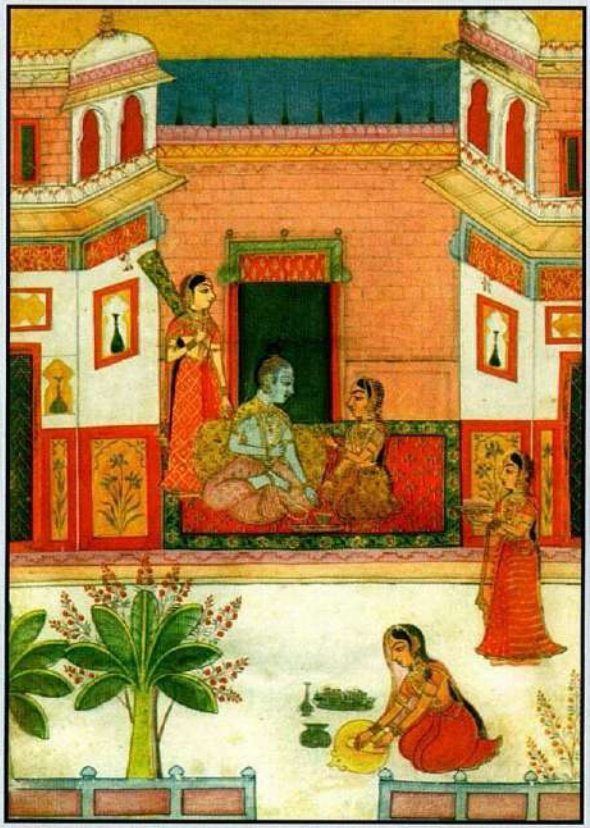

Shiva- Parvati
Circa 18th Century C.E.
Rajasthani Style
GAR NO-AM-MSS-1009

Picture shows Shiva seated inside a pavilion. The Ganga issues from the top of his head. He holds a rosary in one hand. A cup is placed in a plate before him while another is being given to him by Parvati seated in front of the Shiva. Behind Shiva stands a female *Chauri* bearer. In the lower portion one standing and seated lady are seen.

शिव एवं पार्वती
लगभग १८वीं शती ई०
राजस्थानी शैली

चित्र में शिव पार्वती एक दीर्घा के भीतर बैठे प्रदर्शित हैं और पार्वती तश्तरी और प्याले में शिव को कुछ दे रही है। एक अन्य प्याला व तश्तरी उनके समक्ष रखा हुआ है। शिव की जटा से गंगा अवतरित होती हुई दिखाई दे रही हैं। शिव के पीछे एक चॉवर ग्राही खड़ी है। चित्र के निचले भाग में एक स्त्री बैठकर कुछ करती हुई प्रदर्शित है।

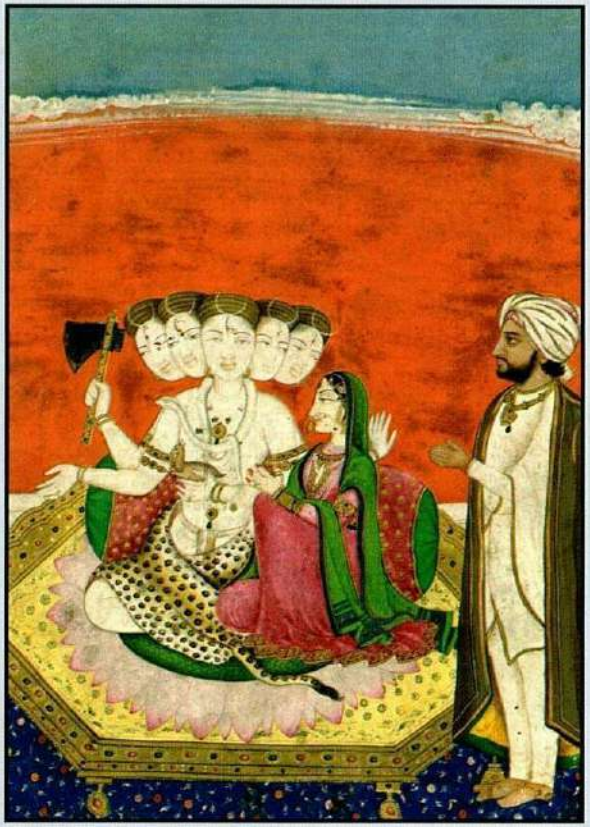

Panchamukhi Shiva
Circa 19th Century C.E.
Pahari style
GAR NO-AM-MSS-209

Picture shows five headed Shiva (Panchamukha) seated with Parvati on a lotus throne. A devote with folded hands is seen standing to the left side of their seat.

पंचमुखी शिव
लगभग १९वीं शती ई०
पहाड़ी शैली

चित्र में पंचमुखी शिव पार्वती के साथ कमलासन पर विराजमान दिखाए गए हैं। एक श्रद्धालु हाथ जोड़े उनके समक्ष प्रार्थना करता हुआ प्रदर्शित है।

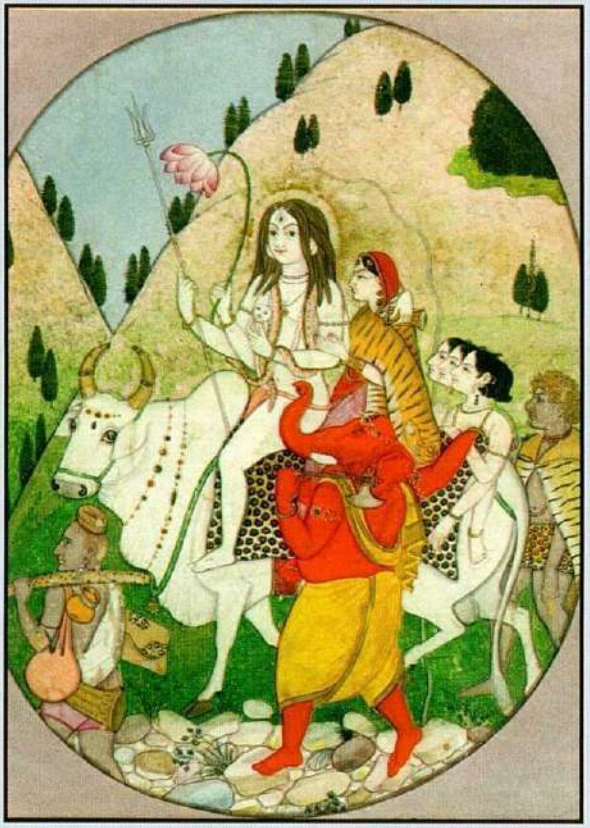

Shiva and Parvati
Circa 19th Century C.E.
Pahari Style
GAR NO-AM-MSS-207

Picture shows Shiva and Parvati seated on the back of the Nandi and moving in the mountains. Ganesha and Kartikeya are accompanying them.

शिव एवं पार्वती
लगभग १९वीं शती ई०
पहाड़ी शैली

चित्र में शिव एवं पार्वती अपने वाहन नंदी पर सवार होकर पर्वतों की ओर जाते हुए दर्शाए गए हैं। गणेश एवं कार्तिक भी साथ चलते हुए प्रदर्शित हैं।

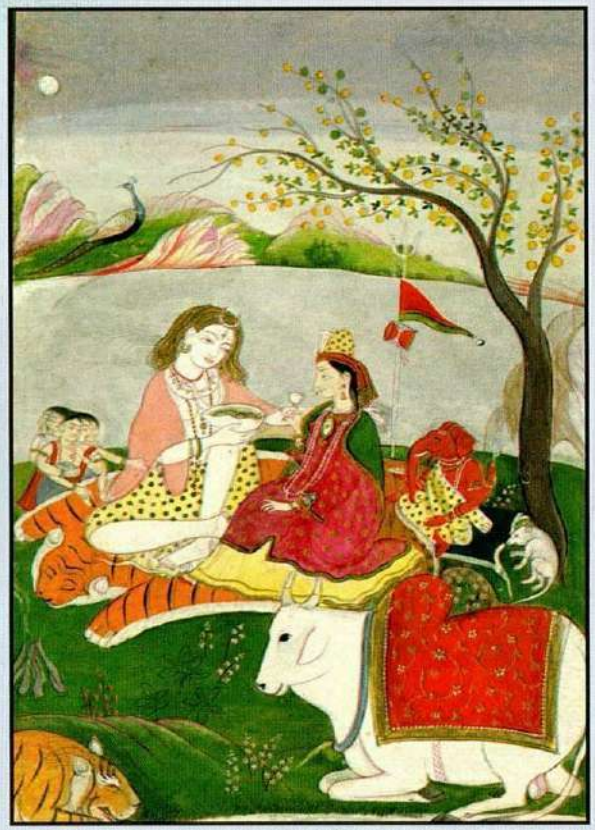

Shiva and Parvati
Circa 18th Century C.E.
Rajasthani Style
GAR NO-AM-MSS-808

Picture shows Shiva and Parvati seated on a lion's skin under a tree. On the right side is seen seated Ganesha and on the left is seated Kartikeya. Below are seen bull and lion seated on the ground.

शिव एवं पार्वती
लगभग १८वीं शती ई०
राजस्थानी शैली

चित्र में शिव एवं पार्वती व्याघ्र चर्म पर एक वृक्ष के नीचे बैठे हुए दिखलाए गए हैं। उनके दाईं ओर गणेश एवं बाईं ओर कार्तिकेय बैठे हुए है। सिंह एवं वृषभ नीचे बैठे हुए हैं।

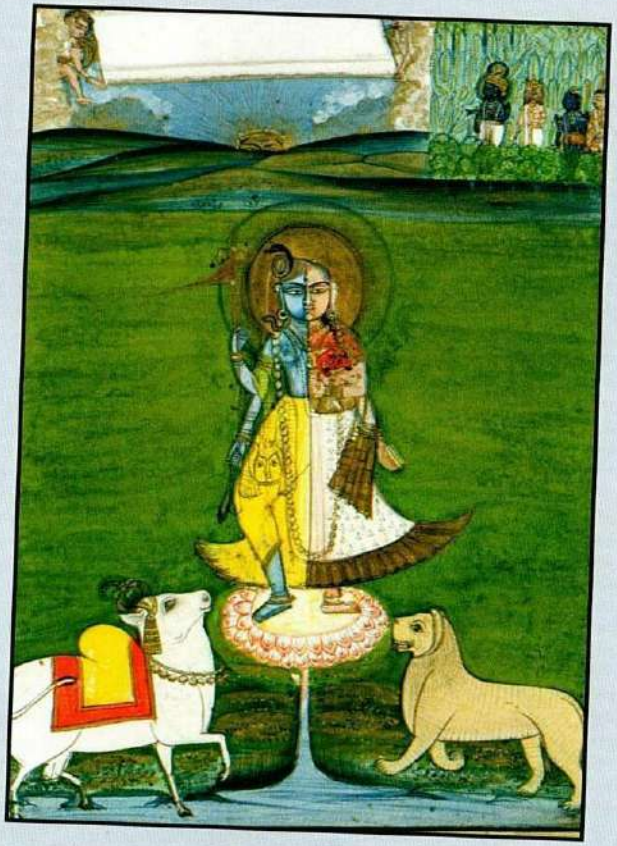

Ardhanarishwara
Circa 18th Century C.E.
Rajasthani Style
GAR NO-AM-MSS-1385

Picture shows Shiva in his dual form (*Ardhanarishwar roop*) standing on a lotus flower. On the either side stand the Nandi and the Lion, the vehicles of Shiva and Parvati respectively.

अर्द्धनारीश्वर
लगभग १८वीं शती ई०
राजस्थानी शैली

चित्र में अपने शिव अर्द्धनारीश्वर स्वरूप में प्रदर्शित हैं, जो कि कमल के फूल पर खड़े हैं। उनकी दांई ओर सिंह और बाईं ओर वृषभ जो कि क्रमशः शक्ति एवं शिव का वाहन है, प्रदर्शित है।

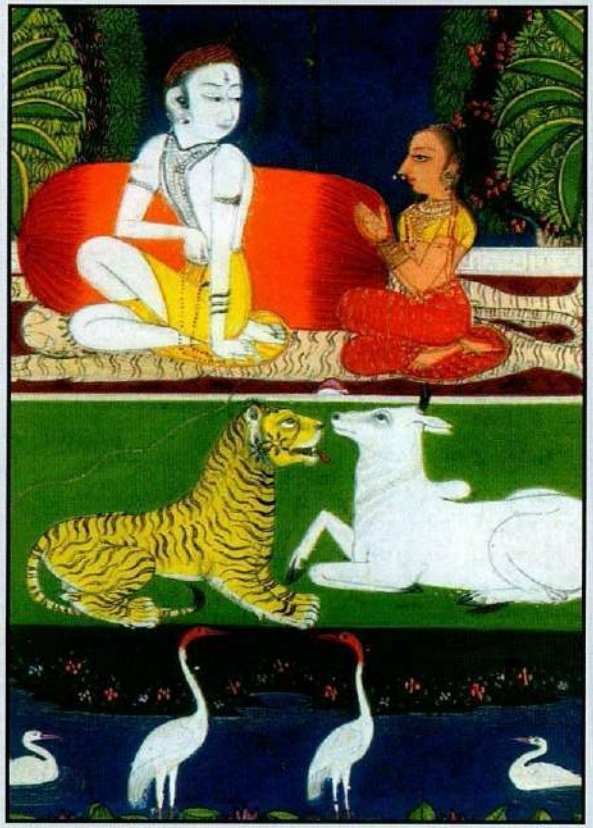

Seated Shiva
Circa 18th Century C.E.
Rajasthani Style
GAR NO-AM-MSS- 1383

Picture shows Shiva seated on a tiger skin. Parvati is seen seated behind him with folded hands. Below are seen their vehicles, the Nandi and the Lion seated face to face. Some birds are also seen inside the water of a lake.

पार्वती संग बैठे शिव
लगभग १८वीं शती ई०
राजस्थानी शैली

चित्र में शिव व्याघ्र चर्म पर बैठे दिखलाए गए हैं। उनके पीछे पार्वती हाथ जोड़े बैठी हैं। नीचे दोनों देवताओं के वाहन नन्दी एवं सिंह बैठे दिखाए गए हैं। चित्र के नीचले हिस्से में कुछ बत्तखएवं बगुले एक तालाब में प्रदर्शित किए गए है।

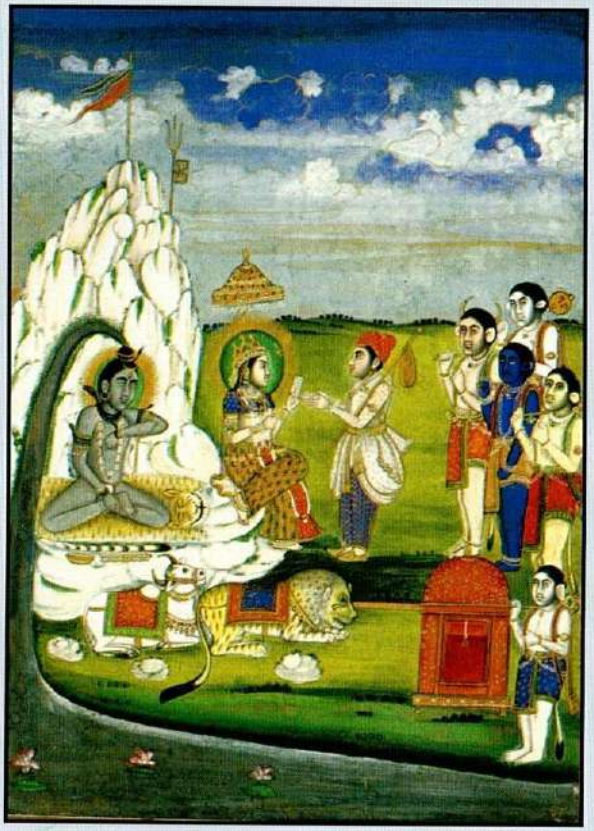

Puranic Scene
Circa 19th Century C.E.
Pahari Style
GAR NO-AM-MSS-7.116

Miniature painting on paper shows a Puranic Scene. Lord Shiva is seated in meditation over mouth Kailash. Parvati is seated to his left holdings a letter and talking to a messenger. Vehicles of both deities are crouching below. Six Shiva *Ganas* are also standing. The painting has a beautiful border and Nagari inscription on back side.

पौराणिक दृश्य
लगभग १९वीं शती ई०
पहाड़ी शैली

कागज पर निर्मित लघुचित्र में पौराणिक दृश्य का अंकन है। भगवान शिव कैलाा पर्वत पर योग मुद्रा में बैठे हैं। पार्वती उनके बाएं हाथ में पात्र लिए बैठी हैं और संदेशवाहक से बात कररही हैं। नीचे दोनों देवताओं के वाहन अंकित हैं। छः शिव गण खड़े हैं। चित्रकला का बार्डर बहुत सुन्दर बनाया गया है।

Four armed Shiva
Circa 18th Century C.E.
Rajasthani Style
GAR NO-AM-MSS-380

Picture shows four armed Shiva standing under a tree. One of his *Ganas* with green complexion stands before him with folded hands.

चतुर्भुज शिव
लगभग १८वीं शती ई०
राजस्थानी शैली

चित्र में में चतुर्भुज शिव पेड़ के नीचे खड़े हैं। सामने हरे रंग का एक गण हाथ जोड़े खड़ा है।

Panchamukhi Shiva and Parvati
Circa 18th Century C.E.
Pahari Style

GAR NO-AM-MSS-590

Picture shows Panchmukhi Shiva and Parvati seated on a lotus throne. On one side stands a devotee with folded hands and on the other three *Ganas*. Below is seen standing *Nandi*.

पंचमुखी शिव और पार्वती
लगभग १८वीं शती ई०
पहाड़ी शैली

चित्र में पंचमुखी शिव व पार्वती कमलासन पर बैठे हैं। उनके एक तरफ एक भक्त हाथ जोड़े तथा दूसरी तरफ तीन गण खड़े हैं। नीचे नन्दी खड़ा है।

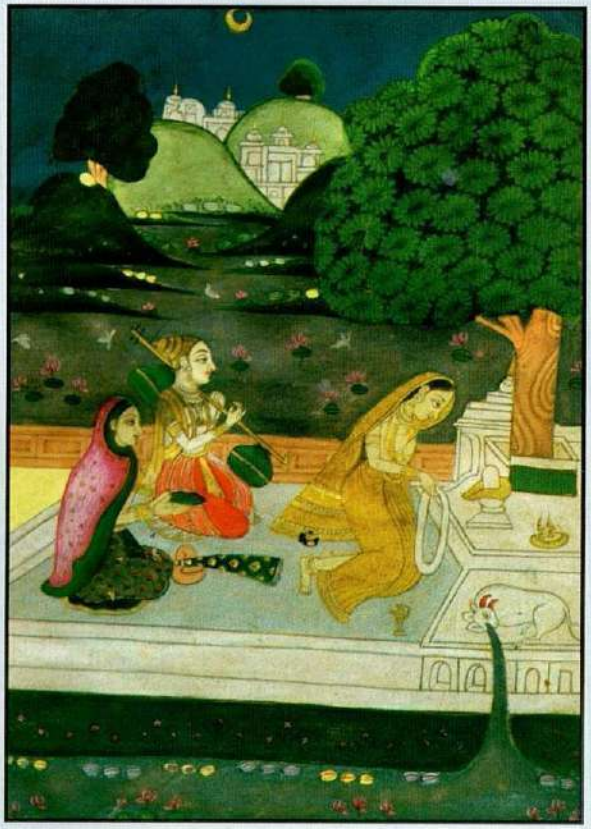

Lady Worshipping Shivalinga
Circa 18th Century C.E.
Deccani Style
GAR NO-AM-MSS-259

Picture shows a Shiva Linga erected under a tree. A lady having a white garland in her hand, is proceeding towards the deity. An attendant is playing on a vina from behind while another keeps belapatra on her palms.

स्त्री द्वारा शिवलिंग की पूजा
लगभग १८वीं शती ई०
दक्कनी शैली

चित्र में शिवलिंग को एक पेड़ के नीचे अंकित दिखाया गया है। एक स्त्री हाथ में सफेद माला लिए हुए मंदिर में पूजा हेतु प्रवेश कर रही है। एक परिचारिक वीणा बजा रही है। एक परिचारिक वीणा बजा रही है जबकि दूसरी ओर उसके पीछे हाथ में बेलपत्र लिए हुए हैं।

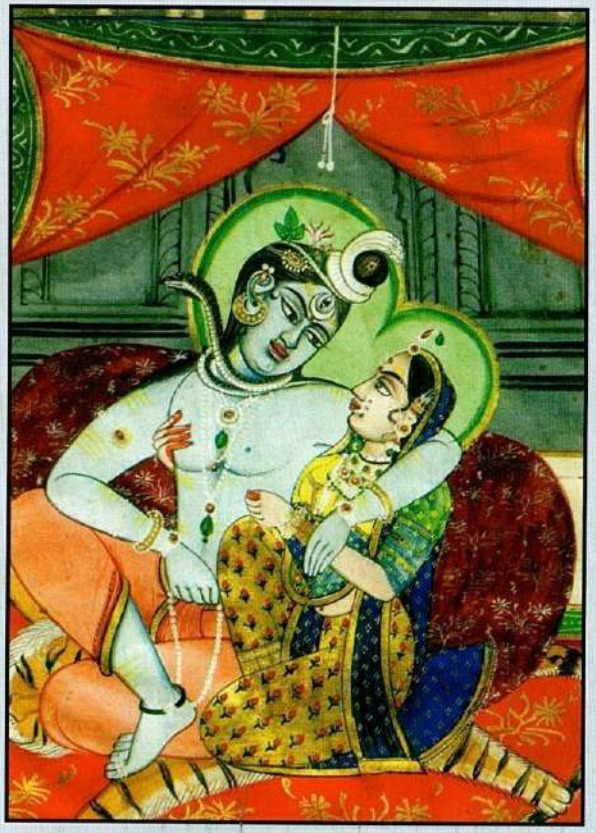

Shiva and Parvati
Circa 20th Century C.E.
Rajasthani Style
GAR NO-AM-MSS-692

Picture shows Shiva and Parvati seated on a lion skin. Shiva's hand is flung across in the neck of Parvati.

शिव-पार्वती
लगभग २०वीं शती ई०
राजस्थानी शैली

चित्र में शिव पार्वती सिंह चर्म पर बैठे हैं। शिव का हाथ पार्वती के कंधे पर है।

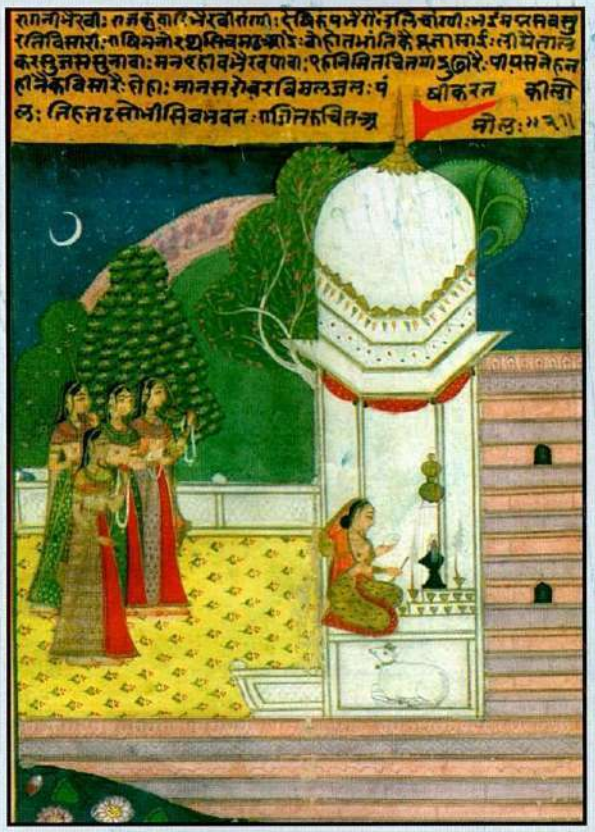

Ragini Bhairavi
Circa 17th Century C.E.
Rajasthani Style
GAR NO-AM-MSS-732

Picture shows a lady worshipping a Shivalinga kept inside a temple. Behind her stand four ladies holding garlands in their hands.

रागिनी भैरवी
लगभग १७वीं शती ई०
राजस्थानी शैली

चित्र में एक स्त्री मंदिर में शिवलिंग की पूजाकर रही है। उसके पीछे चार स्त्रियां अपने हाथ में माला लिए खड़ी हैं।

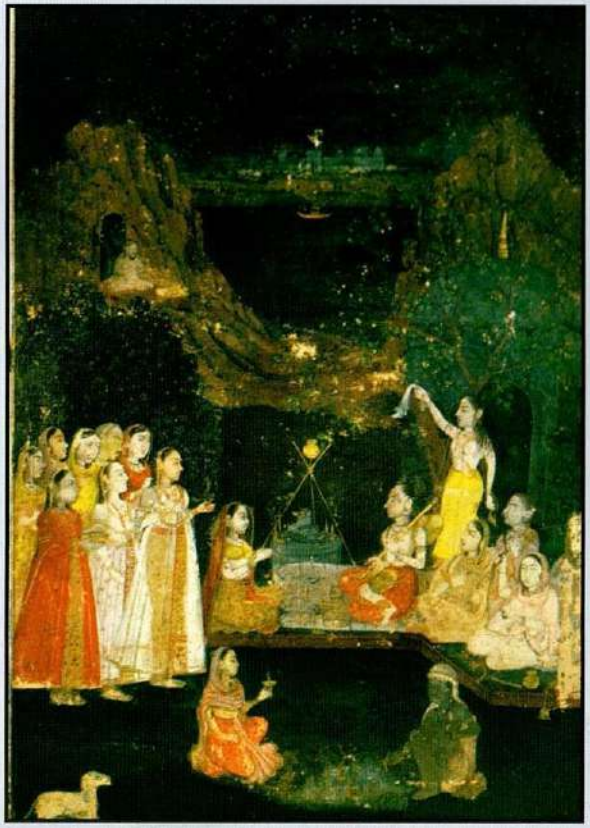

Shivalinga
Circa 18th Century C.E.
Mughal Style
GAR NO-AM-MSS-921

Picture shows worship of a Shivalinga by a lady seated on the left with folded hands. Behind her stands a large number of ladies. On the right, a female saint is playing on a *Vina a*nd another stands behind her. There other ladies are seated behind. Two ladies are seen seated below before a fire altar.

शिवलिंग

लगभग १८वीं शती ई०
मुगल शैली

चित्र में शिव लिंग की पूजा हाथ जोड़कर बैठी स्त्री द्वारा की जा रही है। उसके पीछे बड़ी संख्या में स्त्रियां खड़ी हैं। दाहिनी तरफ एक स्त्री द्वारा वीणा बजाई जा रही है जबकि दूसरी उसके पीछे खड़ी हैं। कुछ स्त्रियां पीछे खड़ी हैं। दो स्त्रियाँ नीचे आग जला कर बैठी हैं।

Ganesha being bathed
Circa 18th Century C.E.
Pahari Style
GAR NO-AM-MSS-893

Picture shows Shiva pouring water on the head of Ganesha. Parvati is giving bath to Ganesha.

गणेश का स्नान
लगभग १८वीं शती ई०
पहाड़ी शैली

चित्र में शिव गणेश के सिर पर पानी गिरा रहे हैं, पार्वती गणेश को नहला रही हैं।

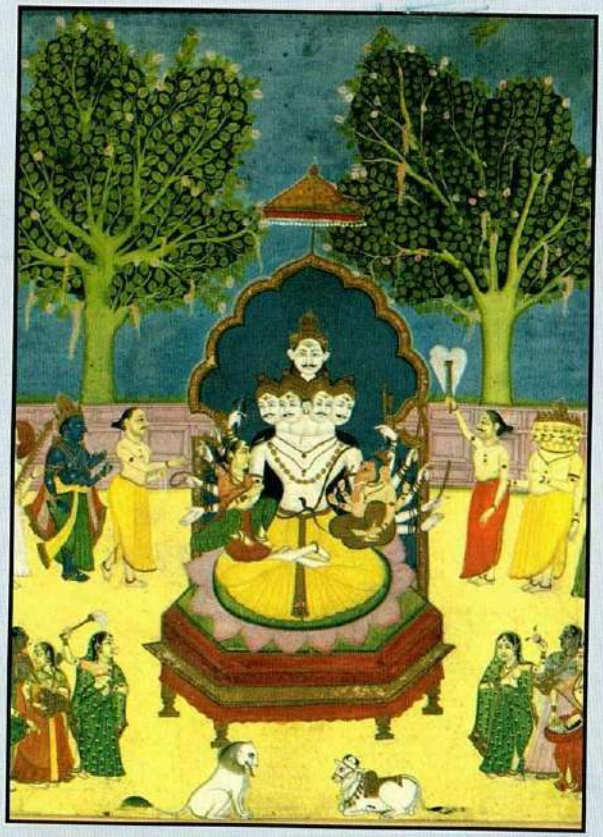

Panchmukhi Shiva
Circa 18th Century C.E.
Rajasthani Style
GAR NO-AM-MSS-1481

Picture shows Panchmukhi Shiva seated on a throne along with his family in the centre. Brahma, Vishnu and others are eulogizing him. A group of four ladies is engaged in dance and music on either side. Below are seen Nandi and lion, the vehicles of Shiva and Parvati.

पंचमुखी शिवलिंग
लगभग १८वीं शती ई०
राजस्थानी शैली

चित्र के मध्य में पंचमुखी शिव अपने परिवार के साथ सिंहासन पर बैठे हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा अन्य उनका अभिवादन कर रहे हैं। चार स्त्रियाँ नृत्य कर रही हैं और दूसरी तरफ संगीत बज रहा है। नीचे नन्दी और सिंह क्रमशः शिव व पार्वती के वाहनों के साथ दर्शाये गए हैं।

Shiva chopping Brahma's head
Circa 18th Century C.E.
Pahari Style
GAR NO-AM-MSS-316

Picture shows on the left side Brahma and Shiva seated on square platforms near the bank of a river. A lady is seen moving on the extreme right and she is followed by Brahma and Shiva. Shiva is seen cutting the fifth head of Brahma with his *Trishula*. The cut head is seen on the ground.

शिव द्वारा ब्रह्म का सिरच्छेदन
लगभग १८वीं शती ई०
पहाड़ी शैली

चित्र में नदी किनारे बाईं तरफ ब्रह्मा और शिव चबूतरे पर बैठे हैं। दाहिनी तरफ एक स्त्री जा रही है और उसका ब्रह्मा और शिव द्वारा अनुक्रमण किया जा रहा है। शिव त्रिशूल से ब्रह्मा के पाँचवें सिर को काटते हुए दिखाई दे रहे हैं। कटा हुआ सिर धरती पर पड़ा हुआ है।

Dancing Shiva
Circa 18th Century C.E.
Pahari Style
GAR NO-AM-MSS-54

Picture shows Shiva dancing in accompaniment of musical instruments played on by his *ganas*, Parvati, Ganesha and Kartikeya.

नृत्यरत शिव
लगभग १८वीं शती ई०
पहाड़ी शैली

प्रस्तुत चित्र में शिव नृत्यरत मुद्रा में प्रदर्शित हैं तथा साथ में शिव-गण, पार्वती, गणेश एवं कार्तिकेय विभिन्न वाद्य यंत्रों को बजाते हुए दिखाए गए हैं।

Shiva in Terracottas

मृण्मूर्तियों में शिव

Shiva Head
Circa 1st-3rd Century C.E.
Mathura District, Uttar Pradesh
GAR NO-AM-TC-M 4702

Terracotta head of Lord Shiva. There is seen a third eye on the forehead. Shiva has a flowing moustache. The top part of the head is damaged.

शिव शीर्ष
लगभग १-३ शती ई०
जनपद मथुरा, उत्तर प्रदेश

भगवान शिव का मृण्शीर्ष जिसमें तीसरी आँख मस्तक पर दिखाई दे रही है। शिव की लहराती हुई मूछें हैं तथा सिर का ऊपरी भाग खण्डित है।

कांस्य शिल्प में शिव

Four armed Shiva
Circa 17th - 18th Century C.E.
GAR NO-AM-BRZ-20.1

Figure of four armed Shiva? Probabely Chandrashekhar. It is standing on a lotus flower with square base. He is wearing *Jatamukuta* with the decoration of Jata. The features are very sharp. with certain changes in its *Aayudhas* (attributes). He is holding a Parasu and a Mriga in his upper two hands, remaining two hands are in *Abhaya* and *Varda mudra*. He is wearing beaded necklace and armlets. Ears are decorated by circular earrings.

चतुर्भुज शिव
लगभग १७-१८ वीं शती ई०

चतुर्भुज शिव की मूर्ति संभवतः चन्द्रशेखर मूर्ति है। यह कमलासन पर खड़ी है तथा जटामुकुट पहने हुए इस मूर्ति की मुखाकृति अति स्पष्ट है। आयुधों में कुछ परिवर्तन आवश्य है। उन्होंने ऊपरी दोनों हाथों में परशु और मृग धारण कर रखा है। शेष दो हाथ अभय एवं वरद मुद्रा में हैं। उन्होंने गले, हाथ तथा बाहों में रूद्राक्ष की माला एवं कानों में रूद्राक्ष कुण्डल धारण किया है।

Shiva's Tandava
Circa 17th - 18th Century C.E.
GAR NO-AM-BRZ-5.3

The dance performed by Lord Shiva is known as Tandava. Shiva's Tandava is a vigorous dance that is the source of the cycle of creation, preservation and dissolution. Tandava depicts his violent nature as the destroyer of the universe. Four armed Shiva dancing on fire. Snakes are wrapped in his feet. He depicted wearing bangles and armlets in his hands. Urna (Auspicious mark) is carved on his forehead. The crescent is also shown on his head dress.

शिव का ताण्डव
लगभग १७-१८वीं शती ई०

भगवान शिव के नृत्य को ताण्डव कहते हैं। शिव का ताण्डव नृत्य सृजन, संरक्षण और संहार चक्र का स्रोत है। ताण्डव उनके हिंसक एवं विध्वंसक/विनाशक स्वरूप का अंकन है। सर्प उनकी टखने के साथ-ही-साथ कलाई एवं बांह में भी लिपटा दिखाया गया है। उर्णा उनके मस्तक पर उत्कीर्णित है तथा जटा पर चन्द्र दिखाया गया है।

Shiva holding Sati's body
Circa 17th - 18th Century C.E.
GAR NO-AM-BRZ-118

Shiva holding Sati's (Siva's consort) charred body on his left shoulder. It is believed that an angry Shiva performed the fearsome and awe-inspiring Tandava dance with Sati's charred body on his shoulders. During this dance, Sati's body came apart and the pieces fell at different places on earth. According to another version, Shiva placed Sati's body on his shoulder and ran about the world, crazed with grief. The Gods called upon the God Vishnu to restore Shiva to normalcy and calm. Vishnu used his Sudarshana Chakra to dismember Sati's lifeless body, following which Shiva regained his equanimity. Both versions state that Sati's body was thus dismembered into 51 pieces which fell on earth at various places. Several different listings of these 51 holy places, known as Shakti Peethas, are available; some of these places have become major centers of pilgrimage as they are held by the Goddess-oriented Shakta sect to be particularly holy.

सती का शरीर लिए शिव
लगभग १७-१८वीं शती ई०

शिव सती का जला हुआ शरीर बायें कंधे पर धारण किये हुए हैं। मान्यता है कि क्रोधित शिव न सती का शरीर अपने कंधे पर धारण कर भयंकर ताण्डव नृत्य किया था। नृत्य के समय सती के शरीर के टुकड़े पृथ्वी पर अलग-अलग स्थानों पर गिरें। दूसरी मान्यता के अनुसार शिव ने सती के शरीर को कंधे पर धारण कर पूरे विश्व में दुःख और क्षोभ के साथ घूमे। देवताओं ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की कि वो शिव को शांत करें। विष्णु ने सुदर्शन चक्र का प्रयोग कर सती के निर्जीव शरी को अलग-अलग किया। शिव शांत हुए जिसके उपरान्त शिव अपने स्वरूप में लौट आये। दोनों ही मान्यताएं बताती हैं कि सती का शरीर 51 टुकड़ों में पृथ्वी के विभिन्न स्थानों पर गिरा जो 51 शक्तिपीठ के रूप में जाने जाते हैं।

Shiva's Tandava
Circa 17th - 18th Century C.E.
GAR NO-AM-BRZ-117

The dance performed by Lord Shiva is known as Tandava. Shiva's Tandava is a vigorous dance that is the source of the cycle of creation, preservation and dissolution. Tandava depicts his violent nature as the destroyer of the universe. Four armed Shiva dancing on fire. Snakes are wrapped in his feet. He depicted wearing bangles and armlets in his hands. Urna (Auspicious mark) is carved on his forehead. The crescent is also shown on his head dress.

शिव ताण्डव
लगभग १७-१८वीं शती ई०

भगवान शिव के नृत्य को ताण्डव कहते हैं। शिव का ताण्डव नृत्य सृजन, संरक्षण और संहार चक्र का स्रोत है। ताण्डव उनके हिंसक एवं विध्वंसक/विनाशक स्वरूप का अंकन है। चतुर्भुज शिव अग्नि पर नृत्यरत हैं। सर्प उनकी टखने के साथ-ही-साथ कलाई एवं बांह में भी लिपटा दिखाया गया है।

Allahabad Museum

Chandra Shekhar Azad Park, Kamla Nehru Road, Allahabad -211 002

Tel. :+91 532-2408237 Email : allahabadmuseum@rediffmail.com, website : www.theallahabadmuseum.com